

## ॥ श्रीदशावतारस्तोत्रम् ॥

प्रलयपयोधिजले धृतवानसि वेदम्।  
विहितवहित्रचरित्रमखेदम्॥  
केशव धृतमीनशरीर जय जगदीश हरे ॥ १ ॥

क्षितिरतिविपुलतरे तव तिष्ठति पृष्ठे।  
धरणिधरणकिणचक्रगरिष्ठे॥  
केशव धृतकच्छपरूप जय जगदीश हरे ॥ २ ॥

वसति दशनशिखरे धरणी तव लग्ना।  
शशिनि कलङ्ककलेव निमग्ना ॥  
केशव धृतसूकररूप जय जगदीश हरे ॥ ३ ॥

तव करकमलवरे नखमद्भुतशृङ्गम्।  
दलितहिरण्यकशिपुतनुभृङ्गम्॥  
केशव धृतनरहरिरूप जय जगदीश हरे ॥ ४ ॥

छलयसि विक्रमणे बलिमद्भुतवामन।  
पदनखनीरजनितजनपावन॥  
केशव धृतवामनरूप जय जगदीश हरे ॥ ५ ॥

क्षत्रियरुधिरमये जगदपगतपापम्।  
स्नपयसि पयसि शमितभवतापम्॥  
केशव धृतभृगुपतिरूप जय जगदीश हरे ॥ ६ ॥

वितरसि दिक्षु रणे दिक्पतिकमनीयम्।  
दशमुखमौलिबलिलं रमणीयम्॥  
केशव धृतरामशरीर जय जगदीश हरे ॥ ७ ॥

वहसि वपुषि विशदे वसनं जलदाभम्।  
हलहतिभीतिमिलितयमुनाभम्  
केशव धृतहलधररूप जय जगदीश हरे ॥ ८ ॥

निन्दसि यज्ञविधेरहह श्रुतिजातम्।  
सदयहृदयदर्शितपशुघातम्॥  
केशव धृतबुद्धशरीर जय जगदीश हरे ॥ ९ ॥

म्लेच्छनिवहनिधने कलयसि करवालम्।  
धूमकेतुमिव किमपि करालम्॥  
केशव धृतकल्किशरीर जय जगदीश हरे ॥ १० ॥

श्रीजयदेवकवेरिदमुदितमुदारम्।

शृणु सुखदं शुभदं भवसारम्॥

केशव धृतदशविधरूप जय जगदीश हरे ॥ ११ ॥